

प्राचीन भारत में पार्थियन आक्रमण पर प्रकाश डालें

भारत के उत्तर-पश्चिमी इतिहास में पार्थियन (Parthian) आक्रमण एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह आक्रमण शकों (Sakas) और कुषाणों (Kushans) के बीच के काल में घटित हुआ था। पार्थियन लोगों को इतिहास में “पहलव” (Pahlavas) नाम से भी जाना जाता है।

1. पार्थियन मूल एवं पृष्ठभूमि

पार्थियन मूल रूप से ईरान के उत्तर-पूर्वी भाग (पार्थिया प्रदेश) से संबंधित थे।

लगभग 250 ई.पू. में अर्साकीस (Arsaces) ने वहाँ पार्थियन साम्राज्य की स्थापना की थी।

इस वंश का राजनीतिक प्रभाव पश्चिम में मेसोपोटामिया तक और पूर्व में भारत की सीमाओं तक फैल गया था।

जब मध्य एशिया में शकों और यवनों की शक्ति कमजोर होने लगी, तब पार्थियन शक्तिशाली होकर भारतीय सीमाओं की ओर बढ़े।

2. भारत पर पार्थियन आक्रमण

लगभग पहली शताब्दी ई.पू. के अंत और पहली शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में पार्थियों ने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया।

उन्होंने अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और पंजाब के कुछ भागों पर अपना अधिकार कर लिया।

भारत में इनका सबसे प्रमुख शासक था — गोंडोफर्नीस (Gondophernes)।

3. प्रमुख पार्थियन शासक — गोंडोफर्नीस (Gondophernes)

गोंडोफर्नीस का शासनकाल लगभग 20 ई. – 46 ई. के बीच माना जाता है।

उसने अपना साम्राज्य कंधार से लेकर सिंधु नदी के तटों तक फैलाया था।

तक्षशिला उसका एक प्रमुख केन्द्र था।

गोंडोफर्नीस के शासनकाल का प्रमाण सिक्कों तथा सेंट थॉमस (St. Thomas) की ईसाई परंपरा से भी मिलता है — कहा जाता है कि सेंट थॉमस इसी काल में भारत आए थे और गोंडोफर्नीस के दरबार में गए थे।

उसके सिक्कों पर ग्रीक और खरोष्ठी दोनों लिपियों में अंकन मिलता है, जो इस काल की सांस्कृतिक मिश्रणशीलता (Hellenistic influence) को दर्शाता है।

4. पार्थियों का पतन और कुषाणों का उदय

पार्थियों की शक्ति बहुत अधिक समय तक नहीं टिक सकी।

कुषाण (Yuezhi) जनजातियों के उभार के साथ पार्थियों को उत्तर-पश्चिम भारत से हटना पड़ा।

लगभग 50 ईस्वी के बाद पार्थियों का प्रभाव लगभग समाप्त हो गया।

इसके बाद कनिष्क के नेतृत्व में कुषाण साम्राज्य का उदय हुआ।

5. पार्थियों का भारतीय इतिहास में योगदान

1. उन्होंने उत्तर-पश्चिम भारत में राजनीतिक एकता की एक अस्थायी अवस्था उत्पन्न की।

2. सिक्कों के माध्यम से कलात्मक और सांस्कृतिक संपर्क बढ़े।

3. पार्थियों ने भारत में यूनानी-पारसी तत्वों के साथ एक नई सांस्कृतिक धारा को जन्म दिया, जिसने बाद में कुषाण कला और गंधार शैली को प्रभावित किया।

निष्कर्ष

पार्थियन आक्रमण भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में होने वाले विदेशी आक्रमणों की एक श्रृंखला का हिस्सा था। यद्यपि उनका शासन अल्पकालिक था, फिर भी उन्होंने भारत में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और राजनीतिक संक्रमण की प्रक्रिया में योगदान दिया। पार्थियों के पश्चात् भारत की सीमाओं पर कुषाणों का